

ओरीगेमी की पुस्तकें

□ रविकान्त तोषनीवाल

‘ओरीगेमी’ यानी कागज को मोड़ने की कला, सीखने-सिखाने के कई जरूरी कौशलों की तरह हमारी प्रारंभिक शिक्षण-संस्थाओं में हाशिए पर है जबकि ओरीगेमी के अन्तर्गत कागज मोड़ कर बनायी गई आकृतियों के जरिए सृजनशीलता, क्रमबद्धता और तर्क-संगति जैसी विशेषताओं को बच्चा सहजता से सीख लेता है। साथ ही, कुछ करके सीखने का आनंद तो उसे मिलता ही है। जबकि करके सिखाने वालों की जमात हमारी शिक्षक बिरादरी में दुर्लभ है, ऐसी पुस्तकों का भी अभाव है जो इस संदर्भ में बच्चों व शिक्षकों की मदद कर सकें। यहां ‘ओरीगेमी’ पर प्रकाशित दो पुस्तकों पर विचार किया जा रहा है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था में कलाओं और उसमें भी हस्तकलाओं को, पहले, दूसरे दर्जे के कामों में तो छोड़िये, दसवें दर्जे के कामों में भी बड़ी मुश्किल से शामिल किया जाता है। नमूने के तौर पर पेपर क्राफ्ट, कसीदे को लें तो इसमें होता यह है कि साल में एक आध बार कोई व्यक्ति अपने सहयोगी के साथ आता है। उसके थैले में बहुत से रंगीन पतंगी कागज, कैंचियां, रंगीन कपड़े, रंगीन धागे और कुछ चीजें होती हैं। इस मौके पर या तो स्कूल के सारे के सारे बच्चे एक जगह इकट्ठे होते हैं या फिर वह व्यक्ति बारी-बारी से एक एक कक्षा में जाकर अपने जौहर दिखाता है।

जिस फुर्ती और सफाई से वह कागज के फूल, माला, पेड़, आदि बनाता है और बहुत ही दक्षतापूर्वक फ्रेम में मढ़े कपड़े पर कोई खूबसूरत-सा नमूना निकाल कर दिखाता है, वह पहली बार देख रहे कई बच्चों को अचंभे में डाल देता है। शायद यही बात उन्हें उकसाती भी है कि वे खुद उन चीजों को बनाकर देखें। लेकिन उस समय ज्यादा से ज्यादा दो-तीन बच्चों को एक आध चीजें बनाने का मौका मिल पाता है। अपने कमाल दिखा चुकने के बाद वह व्यक्ति अपने थैले में से कुछ पतली सी, लुगदी के कागज से बनी किताबें और सुइयां निकालता है। बच्चों को इस भरोसे के साथ अपना माल बेचता है कि वे उसके जैसी चीजें बना पायेंगे। आगे का हाल हम जानते ही हैं कि कैसे ज्यादातर बच्चे सुइ और किताब दोनों से ही मायूस हो जाते हैं।

एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि इस पूरे वाक्ये के दौरान स्कूल या कक्षा के ज्यादातर शिक्षक बच्चों को नियंत्रित करने का दायित्व पूरी जिम्मेदारी से निभाते हैं, कुछ शिक्षक इस काम में थोड़ी बहुत रुचि भी ले लेते हैं। इसके बाद शिक्षक, स्कूल और पूरी शिक्षा व्यवस्था की इस काम में कोई दिलचस्पी नहीं रहती।

ऐसे हालातों में भी कुछ व्यक्ति/शिक्षक जो अपने ही कारणों से कला या हस्तकला के किसी स्वरूप में खासी दिलचस्पी रखते हैं और इसी वजह से निरन्तर या फिर गाहे-बगाहे बच्चों के साथ

काम करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों/शिक्षकों को अपने अनुभवों को किसी किताब के रूप में ढालने का मौका मिले तो उन किताबों के बेहतर होने की गुंजाइश कुछ ज्यादा होती है। कागज को मोड़कर आकृतियां बनाने की कला यानि ‘ओरीगेमी’ पर हिन्दी में शायद पहली बार आयी दो किताबें- ‘एक आधार अनेक आकार’ (1998) और ‘तितलियां’ (1999) कुछ कुछ ऐसी ही हैं।

आप इन किताबों को देखना शुरू करें तो सबसे पहले आकर्षक आवरण बांध लेता है। आवरण के आकर्षण से छूट कर आगे बढ़ें तो ऐसा लगता है कि आप किसी सुन्दर कृति को परत-दर परत देख रहे हों और खुद को पेज दर पेज की गई मेहनत, साज-सज्जा आदि की गिरफ्त में पाते हैं। यदि आपके आस-पास कोई कागज रखा हो, तो एक आध चीज बनाकर देखने से यह गिरफ्त और मजबूत हो सकती है। इन किताबों का प्रस्तुतीकरण निहायत ही उम्दा है। ओरीगेमी में आमतौर पर काम लिये जाने वाले संकेत इन किताबों में काफी अच्छी तरह से और विस्तार से समझाये गये हैं। ओरीगेमी भी अन्य कलाओं की तरह करके सीखी जाने वाली चीज है। ऐसी कलाओं को सीखने का सबसे बेहतर तरीका तो यही है कि उस कला को जानने वाले व्यक्ति के साथ काम करके सीखा जाये। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि यह हर बार और हर जगह संभव भी नहीं हैं, अतः हमें कई बार दूसरा बेहतर तरीका काम लेना पड़ता है। कला से संबंधित किताबें उनमें से एक है।

ऐसी कलाएं जिनमें हाथों से बहुत सारा काम करना पड़ता है उससे जुड़ी किताबें बनाते समय एक बड़ी दिक्कत यह होती है कि ऐसे कई काम जिन्हें हम बहुत सहजता में पल भर में कर लेते हैं, उन्हें भाषा में अभिव्यक्त करने में कठिनाई आती है। यदि किसी तरह उन्हें भाषा में व्यक्त कर भी दिया जाये तो भी कई बार उसे पढ़ कर यह समझ नहीं आता कि करना क्या था? इस परेशानी को हल करने के लिये एक तरीका यह काम लिया जाता है कि उक्त काम को समझाने के लिये चित्र और भाषा का संतुलित उपयोग किया

एक आधार अनेक आकार

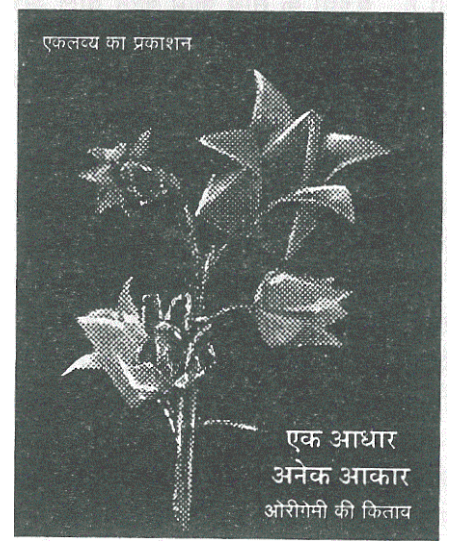
इस किताब के आरंभ में 'अपनी बात' के अन्तर्गत प्रकाशक 'एकलव्य' पाठकों से मुखातिब है। इसमें कुछ बातें ओरीगेमी के बारे में हैं तो कुछ बातें किताब बनने की प्रक्रिया में शहर व गांव बच्चों की भागीदारी के बारे में हैं।

“लेखक की ओर से” वाले हिस्से में प्रस्तुतिकर्ता ने ओरीगेमी से सृजनात्मकता के विकास की संभावना, ओरीगेमी में संकेतों की आवश्यकता, गणित के सिद्धांत समझाने में ओरीगेमी की भूमिका और ओरीगेमी की विशेषताएं बतायी हैं। इसके बाद अनुक्रमणिका दी गई है।

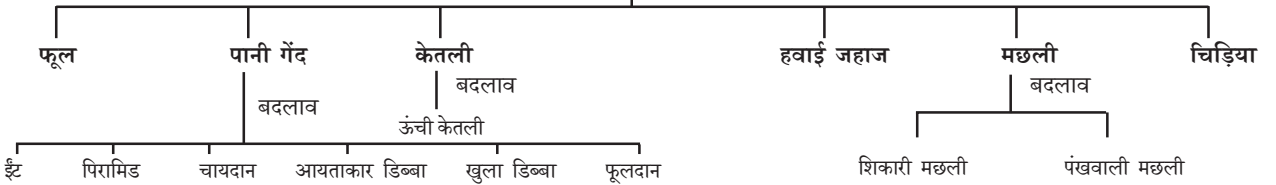
“कुछ जरूरी बातें” वाला हिस्सा कागज की प्रकृति एवं काम शुरू करने के बारे में कुछ सलाहें देता है और संकेतों को अच्छी तरह से समझने की आवश्यकता फिर से प्रतिपादित करता है। “संकेत” में ऐसी प्रक्रियाओं के लिए संकेत तय किये गये हैं, जिनकी जरूरत कागज की चीजें बनाते समय पड़ती हैं जैसे खाई व पहाड़ी मोड़, आकृति को पलटना, बराबर हिस्से, हवा भर कर फुलाना इत्यादि।

इसके बाद किताब के केन्द्रीय आधार “पानी गेंद आधार” को बनाने का तरीका समझाया गया है। पानी गेंद आधार बनाने के हर कदम का चित्र दिया गया है और चित्र के नीचे यह भी लिखा गया है कि हर कदम पर क्या करना है। लिखने के साथ साथ उसी काम का संकेत भी चित्र के साथ दिया गया है। पानी गेंद आधार बनाना सिखाने के साथ साथ इसके विभिन्न हिस्सों को भी विस्तार से समझाया गया है।

फिर पानी गेंद आधार से कई चीजें बनाना सिखाया गया है। सबसे पहले प्रत्येक चीज का फोटो दिया गया है। फोटो के साथ एक टिप्पणी भी दी गई है। फिर पानी गेंद आधार से या पहले सिखाये जा चुके किसी कदम से आगे के कदम, कदम-दर-कदम दिये गये हैं। कई चीजों को बनाने के अंतिम कदमों के साथ ओरीगेमी सीखने वालों के सोचने के लिए कुछ सवाल या करने के लिए कुछ चुनौतियां भी रखी गई हैं। किताब के आखिरी पन्ने पर अन्य आधारों के चित्र भी दिये गये हैं किताब में सिखायी गई चीजें निम्न लिखित हैं।



पानी गेंद आधार



जाये और कुछ ऐसे काम जिन्हें बार बार करने की जरूरत पड़ती है उनके लिये संकेत बना दिये जायें और एक बार उन संकेतों को चित्रों और भाषा के जरिये अच्छी तरह से समझा दिया जाये।

संकेत वाले खण्ड को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है, पहला हिस्सा जिसमें 1-5 और 7 क्रमांक वाले संकेत हो सकते हैं। इन्हें ओरीगेमी शुरू करने से पहले कागज पर करके सीखा जा सकता है। दूसरे हिस्से में बाकी संकेत आ सकते हैं जिन्हें कागज मोड़ कर चीजें बनाते समय ही अच्छी तरह से सीखा व समझा जा सकता है।

“कुछ जरूरी बातें” के अन्तर्गत संकेतों को समझने की आवश्यकता भी रेखांकित की गई है। यदि कोई व्यक्ति इन संकेतों को ठीक से समझ ले और करके देख ले तो आगे बनाई जाने वाली चीजें उनके लिए अधिक आसान हो जायेंगी। बगैर संकेतों का समझें या इनमें दिया काम करके देखे बिना किताब में दिये गये मॉडल बनाना ज्यादातर लोगों को परेशानी में डालता है और यह

धारणा बनाने में भी मददगार होता है कि ओरीगेमी करना कठिन काम है।

कुछ जरूरी बातों का अंतिम अनुच्छेद इस बात की ओर इशारा करता है कि पाठक पहले चित्रों के नीचे लिखी इबारत पढ़ें फिर बनाने की कोशिश करें। “चित्रों के नीचे जो लिखा है उसे ध्यान से पढ़ लो। पहली ही कोशिश में मॉडल नहीं बन पाए तो हताश मत हो जाना। हर कदम और हर संकेत पर गौर करो और आगे बढ़ो। सफलता जरूर मिलेगी।”

मुझे लगता है जो भी व्यक्ति थोड़ी बहुत ओरीगेमी करते रहे हैं आमतौर पर किताब से ओरीगेमी सीखते समय पहले चित्र व संकेत देख कर बनाने की कोशिश करते हैं। यदि नहीं बनता तब उस चित्र के नीचे लिखी इबारत पढ़ कर बनाने की कोशिश करते हैं। कई किताबें भी इसी तरीके का उपयोग करती हैं - किसी चीज को बनाने के कामों के तौर पर ज्यादातर चित्र व संकेत देती हैं और बहुत जरूरत होने पर इबारत दी जाती है।

मेरा अपना अनुभव यह भी है कि जब मैं इबारत पढ़कर कोई चीज बनाने कोशिश करता हूँ तो अधिक उलझता या परेशान होता हूँ जबकि चित्र व संकेतों को देख-समझ कर वही चीज आसानी से बन जाती है। प्रसंगवश गणित में बच्चे इबारती सवालों से कितना जूझते हैं, बच्चों के साथ काम करने वाले अच्छी तरह से जानते हैं। शायद जब हम हर कदम पर इबारत पढ़ कर कागज की चीज बनाने की कोशिश करते हैं तब हमारा हाल इबारती सवालों से जूझते बच्चे जैसा हो जाता है।

इन किताबों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये किसी एक आधारभूत आकृति के इर्द गिर्द बुनी गई है। दोनों किताबों का केन्द्र बिन्दु “पानी गेंद आधार” है। दूसरी किताब में प्राथमिक आधार का भी उपयोग किया गया है परन्तु सिर्फ एक आकृति घूर्णिका में और वह भी सहायक के रूप में। किताब का ढांचा कुछ इस प्रकार लिया गया है - सबसे पहले मूल आकृति से कोई चीज बनाई गई है। फिर उस आकृति में थोड़े थोड़े बदलाव करके नई चीजें बनाई जा सकती हैं, इस तरह के उदाहरण सुझाव/संकेत भी हैं। अन्त में चीजों में होने वाले बदलावों के कारण को समझाने की कोशिश की गई है।

कुछ चीजों में यह ढांचा अपने पूरे निखार पर है जैसे “पानी गेंद आधार और उसके बदलाव”। इसमें सबसे पहले “पानी गेंद आधार” से पानी की गेंद बनाई गई है। फिर इसमें बदलाव करके ईट, आयताकार डिब्बा, पिरामिड, खुला डिब्बा और फूलदान बनाये गये हैं। बदलावों में और बदलाव किये जा सकने की संभावनाएं भी खुली रखी गयी हैं। जैसे खुले डिब्बे के अन्त में यह सवाल देना - “कल्पना करो तो डिब्बे का मुंह खुला क्यों रह गया है? इसे छोटा बड़ा भी कर सकते हैं। सवाल है कैसे? सोचो।” इन किताबों में जगह-जगह ऐसे सवाल रखे गये हैं जो ओरीगेमी करने वालों को स्वयं सोच कर कुछ करने को मजबूर करेंगे। और अन्त में “कोशिश करो” के तहत बदलाव के कारणों को समझाने की कोशिश भी एक आध जगह पर की गई है।

कुछ चीजों में इस ढांचे के तहत सिर्फ एक चीज बनाई गई है और उसमें बदलाव करने के सुझाव दिये गये हैं। बदलाव हो सकते हैं, यह भरोसा कभी तो सिर्फ बात कर के (उदाहरण चिड़िया) और बहुत सी बार बदलाव के रास्तों की तरफ इशारा करके (उदाहरण-कोनेदार गेंद, त्रिशंकु घूर्णिका, पंख वाली मछली आदि में) दिलाया गया है।

यह ढांचा बहुत ही बेहतर ढंग से इस बात को स्थापित करता है कि यदि किसी आधारभूत या मूल आकृति को धीरे धीरे विकसित किया जाये तो वह कितनी तरह की चीजों में स्वयं को बदल सकती है और कितनी चीजों में बदलने की संभावनाएं खोल सकती है।

यदि कोई व्यक्ति इस धारणा पर काम करे, कुछ चीजें बनाये, थोड़ा अधिक गहराई में जाये, इसके विविध पहलुओं को महसूस

करे तो यह संभावना खुलती है कि वह अन्य चीजों को भी इस तरह से देखना शुरू करे, उन पर इस तरह से काम करना शुरू करे।

यह ढांचा इस बात को भी बहुत साफ ढंग से रेखांकित करता है कि हर कदम, आगे उठाये जा सकने वाले कदमों की सीमा तय कर लेता है। जैसे यदि आपने वर्ग से पानी गेंद आधार बनाया तो एक तरह के दायरे खिंच जायेंगे, मछली आधार बनाया तो दूसरी तरह के दायरे खिंच जायेंगे। इसी तरह पानी गेंद आधार के एक तरफ पानी गेंद के लिये जरूरी तालाबंदी करते ही आप दायरों को और सीमित कर लेते हैं। इन्हीं जाने अनजाने दायरों के भीतर बहुत सी चीजें बनायी जा सकती हैं इस बात को भी यह ढांचा बहुत मजबूती से रखता है।

यद्यपि पहली नजर में देखने पर ये किताबें काफी आकर्षक नजर आती हैं। रेखाचित्रों को कम्प्यूटर पर बनाने में सरिता पारे ने खूब मेहनत भी की है। जो व्यक्ति कम्प्यूटर पर काम करते रहे हैं वे इस काम में आयी कठिनाइयों का सहज अनुमान लगा सकते हैं। कई बार किसी ज्यामितीय आकृति को ठीक से बनाने की कोशिश भी बहुत हैरान करती है। यदि वर्ग के कोनों के बीच लकीरें ठीक से खिंच जायें तो केन्द्र खिसक जाता है और केन्द्र ठीक से बन जाये तो लकीरें कोनों से ऊपर/नीचे खिसक जाती हैं।

सरिता पारे की जबरदस्त मेहनत के बावजूद इन किताबों में कई चीजें ऐसी हैं जिन पर थोड़ा ध्यान और देने की जरूरत है। ऐसी बहुत सी आकृतियां हैं जिनमें या तो कोने ठीक से नहीं बने या फिर केन्द्र बिन्दु ठीक से नहीं बन पाया। उदाहरण के लिए “एक आधार अनेक आकार” के पृष्ठ 13 पर वर्ग और आयत, और तितलियां के पृष्ठ 22 पर बने 7 व 8 नम्बर के वर्गों को देखें।

लेखक ने ओरीगेमी के मुख्यतः दो सोपान माने हैं। पहला, मोड़कर आधा करना और दूसरा समरूपता बनाये रखना। इन किताबों को परखने की एक कसौटी यह भी हो सकती है कि किताबें बनाते समय इन सोपानों का कितनी मजबूती से पालन किया गया है।

ज्यादातर जगहों पर इन सोपानों का ठीक से ख्याल रखा गया है। लेकिन कुछ चित्र ऐसे भी हैं जो इन पर खरे नहीं उतरते। उदाहरण के तौर पर “पानी गेंद” में चित्र क्रमांक 4,5,6 देखें। न तो ये दो बराबर हिस्सों में बंटे हैं न ही समरूप हैं। इसी तरह “हीरा तराशने” में चित्र क्रमांक 3 को देखें। उसमें 16 बराबर हिस्सों के बजाय 8 एक आकार के वर्ग हैं तो 4-4 अलग अलग आकार के आयत। इसी क्रमांक 7 में भी सभी 16 हिस्से बराबर नहीं हैं। इसी तरह कई जगह लकीरों की मोटाई कम या ज्यादा हो जाती है और उसका कोई कारण समझ नहीं आता। उदाहरण के लिए “हीरा तराशो” में चित्र 6 और 7 वर्ग की परिधि, “अधपाव लट्टू” में चित्र 1 और 4 में त्रिभुज की परिधि, “सारस बधाई पत्र” में चित्र 4 और 5 में पानी गेंद आधार की सभी लकीरें। इसी पृष्ठ

में चित्र 8 की एक लकीर तो इतनी पतली हो गई है कि दिखाई भी मुश्किल से देती है। इसी के अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र 10,11,12 में लकीरें मोटी से पतली और फिर मोटी हो जाती हैं।

यहां पर यह स्पष्ट कर देना भी जरूरी है कि क्यों इतनी बारीकी से इन किताबों की बनावट को देखने की कोशिश की जा रही है। मुझे लगता है कि ओरीगेमी की एक खास बात यह भी है कि आप जितनी सफाई और कुशलता/दक्षता के साथ चीज बनाते हैं, वह उतनी ही खूबसूरत नजर आती है और बनाने वाले को भी एक खास तरह की संतुष्टि का अहसास होता है। ऐसी संतुष्टि जो अपनी मेहनत से किसी सुन्दर चीज को बना लेने पर पैदा होती है। यदि यह गुण ओरीगेमी की किताब में पगपग पर विद्यमान न हो तो यह उम्मीद करना थोड़ी ज्यादाती होगी कि किताब देख कर चीज बनाने वाले इस गुण की कद्र करेंगे। और अपनी चीजों को पूरी दक्षता के साथ सुन्दर और सुडौल बनाने की कोशिश करेंगे। पूरी पूरी कोशिश के बावजूद भी इन किताबों से कुछ कदम ऐसे हैं जो बगैर समरूपता या कुशलता के उठाये गये हैं और ऐसी चीजें दाल में कंकर की तरह लगातार आती रहती है। इनमें से कुछ का जिक्र ऊपर किया गया है।

इसी तरह हल्की छाया, गहरी छाया और काले रंग का उपयोग एक सोची समझी नीति के तहत किया गया है। हल्के छायांकित

हिस्से का तीन तरह का उपयोग किया गया है, कागज का रंगीन हिस्सा दिखाने में और उस हिस्से को दिखाने में जिस पर काम किया जाना है। और जहां दोनों चीजें एक साथ आ जायें कि रंगीन कागज भी दिखाना है और जिस हिस्से पर काम करना है उसे भी दिखाना है तो इनके लिए क्रमशः हल्के छायांकित और गहरे छायांकित हिस्से का उपयोग किया गया है।

इन किताबों में निरन्तरता कई जगह भंग होती है। चाहे वो एक तरह के छायांकित हिस्सों के आपसी संयोजन का मामला हो। कभी हल्की छाया और हल्की हो जाती है तो कभी हल्की से थोड़ी गहरी। यही हाल कुछ जगह पर गहरी छाया का भी है। हवाई जहाज और चिड़िया में पहाड़ी मोड़ के लिए काली छाया क्यों काम में ली गई यह भी स्पष्ट नहीं होता। इसी तरह लकीरों के मोटे पतले हो जाने का मामला भी निरन्तरता की कड़ी तोड़ता है। यद्यपि मामले में, लेकिन निरन्तरता के भंग करने को मामले में दोनों किताबें लगभग एक स्तर पर हैं।

“एक आधार अनेक आकार” वाली किताब “तितलियां और अन्य खिलौने” की तुलना में अधिक सुगठित और व्यवस्थित की है। प्रस्तुतीकरण के लिहाज से “एक आधार अनेक आकार” पुस्तक पृष्ठ-दर-पृष्ठ कसी हुई नजर आती है और किताब के नाम को सार्थक भी करती है। तितलियों वाली किताब में कई पृष्ठ ऐसे

तितलियां और अन्य खिलौने

‘अपनी बात’ के अन्तर्गत एकलव्य पाठकों से मुखातिब है। इसमें विध्वंस के दौर में सृजन के संदर्भ में ओरीगेमी से जुड़ी एक प्रसिद्ध कहानी है - ‘सदाको और हजार सारस’। साथ ही ओरीगेमी और गणित के आपसी संबंधों का भी जिक्र किया गया है।

लेखक ने इस किताब में अपनी बात “खास बात” के जरिये कही है। “खास बात” मूलतः ओरीगेमी से गणित के संबंधों पर केन्द्रित है। इसके साथ ओरीगेमी की विशेषताओं का जिक्र किया गया है। फिर अनुक्रमणिका दी गई है।

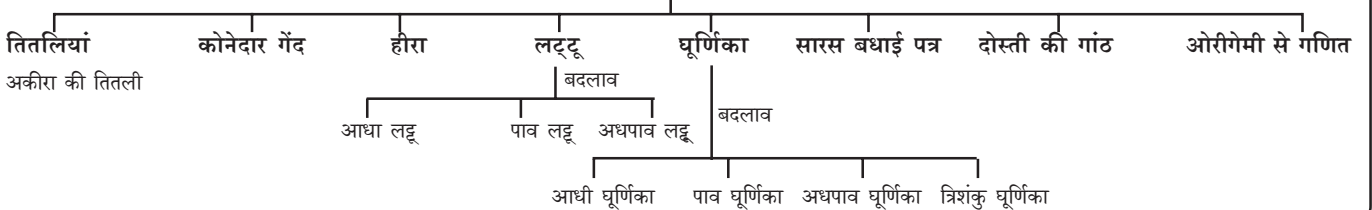
“कुछ जरूरी बातों” में कागज को वर्गाकार बनाने और वर्ग की जांच करने का तरीका सिखाया गया है। “एक आधार अनेक आकार” में ली गई बातों को संक्षिप्त और संशोधित किया गया है।

“संकेत” भी “एक आधार अनेक आकार” की तरह ही दिया गया है। इस किताब में पानी गेंद आधार के साथ साथ प्राथमिक आधार बनाना भी सिखाया गया है। यह किताब भी पानी गेंद आधार पर केन्द्रित है। सिर्फ घूर्णिका में पानी गेंद आधार के साथ साथ प्राथमिक आधार का भी उपयोग किया गया है।

किताब का बाकी ढांचा “एक आधार अनेक आधार” की तरह ही है। सिर्फ अन्त में “ओरीगेमी से गणित” वाला हिस्सा जोड़ा गया है। यह मुख्यतः गणितीय सिद्धांतों को ओरीगेमी के माध्यम से समझाने पर केन्द्रित है। इस किताब में निम्नलिखित चीजें बनाना सिखाया गया है।



पानी गेंद आधार



हैं जहां चित्रों के अनुपात में खाली जगह बहुत ज्यादा है । “ओरीगेमी में गणित” इस किताब के साथ परिशिष्ट की तरह जोड़ा गया लगता है क्योंकि ओरीगेमी से जिस तरह की गणित सीखने की बात की गई है, उसका ‘पानी गेंद आधार’ से कोई संबंध सीधा सीधा नजर नहीं आता है । यह किताब यदि ‘सारस बधाई पत्र’ के साथ ही खत्म हो जाती तो इसका स्वरूप अधिक सुगठित और बेहतर नजर आता ।

“तितलियां और अन्य खिलौने” तक आते आते इस ढांचे की सीमाएं उजागर होने लगती हैं। ऐसा लगता है कि यह किताब अनावश्यक विस्तार का भी शिकार हुई है, खास तौर से लट्टू और घूर्णिका के मामले में । एक तरफ तो यह किताब लेखकीय वक्तव्य में यंत्रवत मोड़ने की विधि न बता कर कल्पना शक्ति और सृजनात्मकता को बढ़ावा देने/उत्साहित करने की बात करती है, कोशिश भी करती नजर आती है जब एक चीज से बहुत से बदलाव करती है और कई चुनौतीपूर्ण सवाल पाठकों के लिए छोड़ती है । लेकिन जब इसी किताब में लेखक लट्टू बनाना सिखाना शुरू करते हैं और पल्लों को फंसाने के नियम बताते हैं तब इतने विस्तार में चले जाते हैं कि, नियम बनाने के साथ साथ, क्या क्या नहीं करना चाहिये भी बताते हैं । सृजनशीलता के विकास में गलती करने की आजादी एक महत्वपूर्ण चीज होती है । लेकिन पल्लों को फंसाने के नियम इस तरह बताने की कोशिश की गई है कि गलती की प्रत्येक संभावना को चित्रित करके दिखाया जाये ताकि गलती की संभावना एकदम खत्म हो जाये । इसी तरह की कसरत अगले पन्नों में भी है जहां हर पल्ला दूसरे पल्ले में कैसे फंसेगा इसे चित्र और भाषा की मदद से समझाने की कोशिश की गई ।

यदि पल्लों के फंसाने के नियमों को गौर से पढ़ा जाये तो पता चलता है कि मूल नियम एक ही है, अगल बगल वाले पल्लों के साथ प्रक्रिया अलग होगी । यानि एक पल्ला अन्दर फंसेगा तो उसके बगल वाला बाहर । दिया गया दूसरा नियम इसी नियम का परिणाम है । इसी तरह अलग-अलग रंग के पानी गेंद आधार सुविधा के लिए, लिये गये हैं । यह लट्टू एक, दो, तीन, छह रंगों के पानी गेंद आधार से भी बनाया जा सकता है ।

लट्टू बनाने में कल्पना के उपयोग की खूब सारी संभावनाएं रखी जा सकती थी । जैसे कदम तीन में तीनों पानी गेंद आधारों को ठीक से जोड़ने के बाद खुला छोड़ दें । अगला कदम चार न दिया जाये । कदम 5 में बने लट्टू के चित्र को देखकर और अब तक सीखे गये नियमों के आधार पर लट्टू बनाने की कोशिश की जाये ।

दूसरा तरीका यह हो सकता था कि यह तो बतायें कि एक पल्ला दूसरे पल्ले में कैसे फंसता है । लेकिन अगल बगल वाले पल्लों के फंसने के नियम ना बतायें, लट्टू बनाने वाले को खुद ढूंढने दे । यदि लट्टू बनाने वाले की ओरीगेमी में थोड़ी बहुत रुचि है और थोड़ा धैर्य भी है तो वह पूरा नियम स्वयं खोज लेगा । इस

खोज के बाद लट्टू बनाने व घुमाने में जो मजा आयेगा वह कुछ और ही होगा ।

घूर्णिका और लट्टू पर काम करते समय मुझे लगातार यह भी लगता रहा कि कहीं इसमें बदलाव के लिये बदलाव तो नहीं किये जा रहे हैं । पानी गेंद के बदलावों में तो फिर भी रुचि बनी रहती है लेकिन चाय की केतली, मछली और लट्टू के बदलावों में उतनी ही रुचि लोगों की होगी, कहना मुश्किल है । एक आकार अनेक आधार वाली किताब में तो फिर भी बदलाव करने के बाद कुछ ठोस आकृतियां बनती हैं । लेकिन तितलियों वाली किताब में लट्टू और घूर्णिका बनाते समय पाव और अधपाव लट्टू/घूर्णिका ओरीगेमी करने वालों को आकर्षित कर पायेगी, इसमें संदेह है ।

कुछ छोटी छोटी बातें इन किताबों को देखते समय और कुछ चीजें बनाते समय मेरे मन में उमड़ती घुमड़ती रही ।

क्या हम अनुवादित भाषा जैसे पानी गेंद आधार, मछली आधार की जगह चीजों के लिये अपनी भाषा में ठीक से नाम ढूंढ पायेंगे । राबर्ट नील के “व्हिरलिंग टॉप” को लट्टू नाम देना शायद ऐसी ही किसी कोशिश का नतीजा है । लेकिन उसमें अगली चीज के लिए घूर्णिका जैसा अपरिचित नाम क्यों रख दिया गया है, यह समझना थोड़ा मुश्किल हो जाता है । हो सकता है जैसे जैसे ओरीगेमी करने वाले बढ़ें, बेहतर नाम मिल पायें । किसी एक आधार के इर्द गिर्द बुनी गई किताब बनाने की कोशिश, जो पहली किताब में बड़ी शिद्दत के साथ उभर कर आती है, दूसरी किताब के अन्त तक आते आते ओरीगेमी में गणित को लेने के लिये मजबूर क्यों हो जाती है । इन दोनों किताबों में आकृतियां बनाने के तरीकों को समझाने में गणित का जितना उपयोग किया गया है वह ओरीगेमी स्वयं करके सीखने में सहायक है अथवा बाधक ।

एक तरफ तो किताब का प्रकाशक एकलव्य समूह बच्चों को भरोसा दिलाता है कि “कागज के छोटे से टुकड़े से तुम पंख फड़फड़ाने वाली चिड़िया भी बना सकते हो । ना.. ना.. ना जादू-वादू कुछ नहीं। बस कागज को मोड़ना भर है ।” दूसरी तरफ लेखक चार कदमों को इकट्ठा करके मंत्र का नाम देते हैं । मंत्र जिसका एक अर्थ गुर जरूर होता है लेकिन जिस पर जादू-टोने और कर्मकांडों की गहरी छाया भी है । इन सब बातों के बावजूद इस बात में कोई शक नहीं कि प्रकाशक ओर प्रस्तुतिकर्ता ने ओरीगेमी की दो बेहतर किताबें उपलब्ध करवाने की भरपूर कोशिश की है । ये किताबें निरन्तर बेहतर होते रहने के लिए खुली भी है, इसकी झलक तितलियां और अन्य खिलौनों में “खास-बात” और “कुछ जरूरी संकेत” वाला हिस्सा देता भी है । दो सालों से, हर साल में एक ओरीगेमी की किताब निकालने का जो सिलसिला शुरू किया गया है, वह आगे भी जारी रहेगा और तेज भी होगा यह उम्मीद की जा सकती है । ♦